संदेश

भाकपा (माओवादी) की 20वीं स्थापना वर्षगांठ को
21 सितंबर से 20 अक्टूबर तक
देशभर में समरोत्साह एवं क्रांतिकारी जोश के साथ मनाएं!

क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों को स्वीकार करें!
तीन जादुई हथियारों के रूप में पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा को विकसित करें!
पार्टी को उन्मूलन करने के लक्ष्य से चलाए जा रहे
'ऑपरेशन कगार' का मुकाबला करें!
जनाधार एवं आत्मगत शक्तियों को बढ़ाते हुए
पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन को बचाते हुए
दुश्मन के खिलाफ दृढ़ता से लड़ते हुए विजय पथ पर आगे बढ़ाएं!

पार्टी कतारों, पीएलजीए बलों, क्रांतिकारी जन निर्माणों एवं जनता को
हमारी केंद्रीय कमेटी का आह्वान!

केंद्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

भाकपा (माओवादी) की 20वीं स्थापना वर्षगांठ को 21 सितंबर से 20 अक्टूबर तक क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों को स्वीकार करें! तीन जादुई हथियारों के रूप में पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा को विकसित करें! पार्टी को उन्मूलन करने के लक्ष्य से चलाए जा रहे 'ऑपरेशन कगार' का मुकाबला करें! जनाधार एवं आत्मगत शक्तियों को बढ़ाते हुए पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन को बचाते हुए दुश्मन के खिलाफ दृढ़ता से लड़ते हुए विजय पथ पर आगे बढ़ाएं!

हमारी पार्टी के गठन की 20वीं स्थापना वर्षगांठ की खुशी के इस अवसर पर, भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी समस्त पार्टी कतारों, जनमुक्ति गुरिल्ला सेना (पीएलजीए) कमांडरों व योद्धाओं, क्रांतिकारी जन कमेटियों (आर.पी.सी.) और जन संगठनों, उन हजारों कामरेडो जिन्होंने जेलों में लाल परचम को ऊंचा उठाए रखे हैं और देशभर के हमारे संघर्ष के इलाकों की लाखों–करोड़ों क्रांतिकारी जनता को हार्दिक शुभकामनाएं पेश करती है. आप लोगों ने पिछले दो दशाकों के समय में कितने भी परेशानियों, कष्टों, तकलीफों एवं नुकसानों को सामना करने के बावजूद, पार्टी एवं क्रांति के लिए जीतोड़ महनत करते हुए महत्वपूर्ण उपलब्धियां दिलाए हैं. हमारी केंद्रीय कमेटी पूरी दुनिया की मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी पार्टियों, भारत देश के समस्त जनवादियों, प्रगतिशील शक्तियों एवं विभिन्न क्षेत्रों के जनहितैशी प्रमुखों को तहेदिल से अभिवादन पेश करती है जिन्होंने, भारतीय क्रांति के साथ एकजुटता से कदम बढ़ाया है और प्रतिक्रांतिकारी भारत राज्य द्वारा 'ऑपरेशन ग्रीन हंट', 'समाधान', 'सूरजकुंड योजना', इसके तहत वर्तमान 'ऑपरेशन कगार' के नाम पर चलाए जा रहे फासीवादी बर्बर क्रूर 'जनसंहार युद्ध' (Genocide) के खिलाफ साहसिक रुख अपनाकर आगे आएं हैं.

इस अवसर पर हमारी केंद्रीय कमेटी पार्टी कतारों, पीएलजीए बलों, क्रांतिकारी जन संगठनों, क्रांतिकारी जन कमेटियों एवं जनता को आह्वान करती है कि पार्टी के द्विदशाब्दी वर्षगांठ को एक महीने के अभियान के रूप में इस महत्वपूर्ण लक्ष्य के साथ मनाएं कि क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों को स्वीकार कर, तीन जादुई हथियारों के रूप में पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा को मजबूत किया जाए और ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी शासक वर्ग के सरकार द्वारा पार्टी एवं

क्रांतिकारी आंदोलन को उन्मूलन करने के लक्ष्य से चलाए जा रहे 'ऑपरेशन कगार' का वर्ग संघर्ष एवं गुरिल्ला युद्ध जरिए मुकाबला करते हुए, जनाधार एवं आत्मगत शक्तियों को बढ़ाते हुए, पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन को बचाते हुए, उसे विजय पथ पर आगे बढ़ाया जाए.

21 सितंबर, 2004 को हमारी एकीकृत पार्टी के गठन के बाद के 20 वर्षों में क्रांतिकारी लक्ष्य हासिल करने के लिए हमारे प्यारे केंद्रीय कमेटी के 22 सदस्यों (इसमें 8 जन पोलिट ब्यूरो सदस्य शामिल हैं) समेत 5,249 कामरेडों ने अपनी अनमोल जिंदगियों को बलिदान दिया. इसमें 1,000 महिला कामरेड शामिल हैं. शहीदों में सैक/एसजडसी/एससी सदस्य 48 जन, आरसी सदस्य 14 जन, जडसी/डीवीसी/डीसी सदस्य 167 जन, सबजोनल कमेटी सदस्य 26 जन, एसी/पीपीसी सदस्य 505 जन, पार्टी व पीएलजीए सदस्य 871 जन, जन निर्माणों के कार्यकर्ताओं एवं क्रांतिकारी जनता 3,596 जन शामिल हैं. पिछले एक वर्ष में ही पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा से संबंधित कामरेडों एवं क्रांतिकारी जनता 218 जन शहीद हुए. महान नक्सलबाड़ी क्रांतिकारी किसान संघर्ष के समय से लेकर भारत देश के क्रांतिकारी आंदोलन में हजारों ज्ञात–अज्ञात कामरेड शहीद हुए. इनमें से हर एक नुकसान, विशेषकर हमारे प्रमुख नेताओं का नुकसान हमारी पार्टी के लिए गंभीर धक्का था. लेकिन शहीदों द्वारा बहाया गया खून से भारत देश का क्रांतिकारी रास्ता और लालिमा हो गयी. भारत के क्रांतिकारी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाईन और समृद्ध बनायी गयी. शहीदों के आदर्शों एवं उनके कम्युनिस्ट सपनों ने हमें जनता की सेवा करने और पार्टी से लिए गए फौरी, प्रधान एवं केंद्रीय तथा अन्य प्रमुख कर्तव्यों को पूरा करने में हमें और भी फौलादी मजबूती दी. केंद्रीय कमेटी इन महान शहीदों को जिनके खून ने हमारी पार्टी, पीएलजीए और संयुक्त मोर्चा तथा इसके नेतृत्व में नई जनवादी क्रांति को पोषित किया है, सिर झुकाकार अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि पेश करती है. इनकी शहादत शहीदों की उस विरासत का हिस्सा है जिसमें शामिल हैं, भारतीय क्रांति के निर्माता, हमारी पार्टी के संस्थापक नेताद्वय एंव शिक्षक कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी. केंद्रीय कमेटी और पूरी पार्टी उनकी बलिदानों से, नई सत्ता एवं नए समाज के निर्माण में उनकी सृजनात्मक भूमिका से प्रेरणा लेती है. इसी तरह पिछले दो दशकों में विश्व समाजवादी क्रांति के तहत विभिन्न देशों में अपने प्राण न्योछावर करने वाले अनगिनत क्रांतिकारी नेताओं एवं सदस्यों को केंद्रीय कमेटी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है. तमाम शहीदों के सर्वश्रेष्ठ आशयों को पूरा करने के लिए दोगुनी संकल्प के साथ काम करने की शपथ लेती है.

प्यारे कामरेडो एवं जनता!

20 वर्ष पहले हमारा देश में देश की दो प्रमुख क्रांतिकारी धाराओं के एकीकरण से गठित हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) की स्थापना के समय में हमने अपने लक्ष्यों और कार्यभारों को जनता के सामने इस तरह रखाः

''यह नई पार्टी – भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) भारत के सर्वहारा के एक संगठित राजनीतिक अगुवा दस्ते के रूप में बनी रहेगी. मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद इसका सैद्धांतिक आधार होगा. यही इस पार्टी के चिंतन और तमाम क्षेत्रों के उसके क्रियाकलापों का मार्गदर्शन करेगा. दक्षिणपंथ और वामपंथ के खिलाफ, खासकर संशोधनवाद, जिससे भारत के कम्युनिस्ट आन्दोलन को सबसे ज्यादा खतरा है, के खिलाफ यह नई पार्टी कटिबद्ध रहेगी और लड़ती रहेगी. इस माओवादी पार्टी का फौरी लक्ष्य और कार्यक्रम यही है कि विश्व सर्वहारा क्रांति के तहत हमारे देश में जारी नई जनवादी क्रांति को आगे बढ़ाया जाए. अप्रत्यक्ष शासन, शोषण, नियंत्रण जैसे नव औपनिवेशिक तरीकों में जारी इस अर्ध–औपनिवेशिक व अर्ध–सामंती व्यवस्था को उखाड़ फेंकना इस क्रांति का अहम हिस्सा है. यह क्रांति साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीवाद के खिलाफ जारी रहेगी. सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी युद्ध, यानी दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए इस क्रांति को अंजाम दिया जाएगा. हथियारबंद ताकत के जरिए सत्ता को छीन लेना ही इसमें केन्द्रीय व मुख्य कार्यभार होगा. ग्रामीण अंचलों से होते हुए शहरों को घेर कर आखिरकार उन्हें कब्जे में ले लिया जाएगा.

''इसलिए पार्टी के काम का अहम हिस्सा देहाती इलाकों और दीर्घकालीन लोकयुद्ध का ही होगा. शहरी काम इसके पूरक के रूप में रहेगा. चूंकि इस नवजनवादी क्रांति में हथियारबंद संघर्ष ही संघर्ष का उन्नत और प्रधान स्वरूप रहेगा और जनसेना ही संगठन का प्रधान स्वरूप रहेगा, इसलिए हथियाबंद संघर्ष की भूमिका ही अहम होगी. हथियारबंद संघर्ष के दौरान सत्ता को छीनने के लिए संयुक्त मोर्चे का गठन किया जाएगा. जन संगठन और जन संघर्ष आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी हैं बशर्ते उनका उद्देश्य युद्ध की सहायता करना होगा. हम यह भी घोषणा करते हैं कि पीजीए और पीएलजीए का विलय एकीकृत पीएलजीए (जन मुक्ति छापामार सेना) में हो गया है.

''इसके अलावा, जनता के विभिन्न राजनीतिक सवालों पर और समस्याओं पर क्रांतिकारी जन आन्दोलनों की नई उभार निर्मित करने पर यह नई एकीकृत पार्टी ज्यादा जोर देगी. साम्राज्यवाद, सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद के खिलाफ चलाये जाने वाले इन संघर्षों में व्यापक जन समुदायों को भागीदार बनाने की कोशिश की जाएगी.

''यह नई पार्टी अलग होने के अधिकार समेत आत्मनिर्णय अधिकार के लिए लड़ रही राष्ट्रीयताओं के आंदोलनों को समर्थन करती रहेगी और इन आंदोलनों पर राजकीय दमन की निंदा करती है. महिलाओं को क्रांति में आसमान में आधा हिस्से के रूप में और एक जबर्दस्त शक्ति के रूप में गोलबंद करने और उन्हें संगठित करने पर यह पार्टी विशेष ध्यान देगी. सभी किस्म के सामाजिक उत्पीड़नों, खासकर छुआछूत और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष करेगी. यह पार्टी हिन्दू फासीवादियों, जो कि काफी खतरनाक हैं, को बेनकाब करने, उन्हें अलग–थलग करने और परास्त करने के लिए काम करेगी. साथ ही, अन्य धार्मिक साम्प्रदायिकतावादी ताकतों को भी बेनकाब करेगी.

''हमारी यह नई पार्टी भारतीय शासक वर्गों के विस्तारवादी नीतियों, उनकी मदद कर रहे साम्राज्यवादी आकाओं, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों को बेनकाब करते हुए उनका प्रतिरोध करने की नीति जारी रखेगी. यह पेरू, फिलिप्पीन्स, तुर्की आदि देशों में माओवादी पार्टियों के नेतृत्व में जारी लोकयुद्धों का हमारी पार्टी समर्थन करती रहेगी. साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ जारी तमाम जन संघर्षों को इस नई पार्टी का समर्थन जारी रहेगा. वह विश्वभर में जारी सर्वहारा आंदोलन और अन्य जनांदोलनों को समर्थन करती रहेगी.

''यह एकीकृत पार्टी सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयतावाद के परचम को ऊंचा उठाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर असली मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी ताकतों को एकताबद्ध करने के प्रयास में और ज्यादा सक्रिय भूमिका अदा करेगी. इतना ही नहीं, दुनिया की तमाम शोषित–पीड़ित जनता और राष्ट्रीयताओं के साथ यह पार्टी एकताबद्ध होकर, साम्राज्यवाद और उसके गुर्गों के खिलाफ विश्व सर्वहारा क्रांति को आगे बढ़ाने के लक्ष्य के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ेगी. यह दुनियाभर में समाजवाद, और साम्यवाद को हासिल करने का रास्ता सुगम बनाएगी.''

इन दो दशकों में पार्टी दुश्मन के पाशविक दमन का सामना करते हुए, गंभीर नुकसन उठाते हुए, सामने आयी हुई बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए लक्ष्यों एवं कार्यभारों को पूरा करने के लिए स्थिरता से काम किया. नयी पार्टी गठन से भयभीत होने वाले भारत के दलाल शोषक–शासक वर्ग हमारी एकीकृत पार्टी को देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरे के रूप में घोषित की. साम्राज्यवादियों ने भाकपा (माओवादी) को विश्व में एक खतरनाक आतंकवादी संगठन के रूप में घोषित की. देशभर में पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के लक्ष्य से साम्राज्यवाद–प्रायोजित प्रतिक्रांतिकारी एल.आई.सी. रणनीति व कार्यनीति के तहत 2005 से एक के बाद एक, लगातार, अविराम 'श्वेत मिलिशिया अभियानों'/'हत्यारे गिरोहों के हमलों', 'ऑपरेशन ग्रीन हंट', 'समाधान', 'सूरजकुंड योजना' के नाम पर

रणनीतिक प्रतिक्रांतिकारी हमले के अभियानों को देशभर में क्रांतिकारी इलाकों में ही नहीं, बल्कि शहरी इलाकों में भी चलाया गया. केंद्रीय एवं राज्य सरकारों के लाखों भाड़े के सशस्त्र बलों की तैनाती की गयी. इसके लिए दसियों हजार करोड़ रुपये बहाये गये.

दुश्मन के सशस्त्र बलों द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन के जंगल और मैदानी ग्रामीण इलाकों में हमारी पार्टी व पीएलजीए के बलों पर, नयी क्रांतिकारी जन राजसत्ता के इकाइयों पर एवं जन संगठनों, क्रांतिकारी जन कमेटियों, जन मिलिशिया पर एवं जनता पर हमलें केंद्रीकृत किए गए. कूंबिंग ऑपरेशनों, रोड ओपनिंग ऑपरेशनों, एरिया डेमिनेशन ऑपरेशनों के तहत जनता की संपत्ति, फसलों, खाद्यान्न, जनता अपने सामूहिक श्रम से बनायी गयी बुनियादी सुविधाओं को ध्वस्त करना, लूटना, मवेशियों को मार कर खाना, जनता को सामूहिक रूप से गिरफ्तार करना, क्रूर तरीके से पिटाई करना एवं यातनाएं देना, महिलाओं पर सामूहिक अत्याचार करना, जनता को चुन–चुन कर एवं सामूहिक रूप से भी झूठी मुठभेड़ों में हत्या करना, गलत मुकद्दमें दर्ज कर जेल भेजना आम बात बन गयी है. दूसरी तरफ क्रांतिकारी खेमे में फूट डालने एवं क्रांतिकारी जनता को आंदोलन से अलग–थलग करने के लिए केंद्र–राज्य सरकारों के विभिन्न प्रशासन विभाग और पुलिस बलों द्वारा 'सिविक एक्शन प्रोग्रामों' के नाम पर आकर्षक नाम देकर झूठे सुधार कार्यक्रम चलाए गए. इसके जरिए जनता के अंदर मुखबिर व कोवर्ट जाल बनाया गया एवं मजबूत किया गया.

एकीकृत पार्टी गठन के बाद दुश्मन के भीषण प्रतिघाती हमलों में गंभीर नुकसानों के बीच ही, हमारी पार्टी द्वारा वर्गदिशा व जनदिशा को लागू कर, उन्हें मुकाबला करते हुए हासिल की गयी बड़ी सफलताओं में एक थी, दुश्मन द्वारा पैदा की गई गंभीर अडचनों को पार कर ऐतिहासिक एकता कांग्रेस–9वीं कांग्रेस को सफलतापूर्वक संपन्न करना और पार्टी एकता को और मजबूत करना. 2013 दिसंबर में भाकपा (माओवादी) एवं भाकपा (मा–ले) नक्सलबाड़ी ने एक ही पार्टी के रूप में विलय होना और एक महत्वपूर्ण सफलता थी. देश में सच्ची क्रांतिकारियों के बीच एकता हासिल करने के प्रयास में यह और एक मुख्य सफलता थी. हमारी एकीकृत पार्टी के संस्थापक नेताद्वय कामरेड सीएम, कामरेड केसी द्वारा रेखांकित भारतीय क्रांति की बुनियादी लाइन के अनुसार चलाए जा रहे नवजनवादी कार्यक्रम को एकता कांग्रेस के मार्गदर्शन में समृद्ध बनाते हुए पार्टी की बुनियादी दस्तावेजों को बनाकर, उन्हें व्यवहार में जांच करने, समृद्ध बनाने के दौरान पार्टी अपेक्षाकृत मजबूत होती आयी. सभी राज्यों को कवर करते हुए सीसी में रीजिनल ब्यूरों एवं रीजिनल ब्यूरो कमांड गठित हुई. सीसी में स्टांडिंग कमेटी, पीबी, सीएमसी, और राज्यों मे और सरहद राज्यों को

मिला कर विभिन्न स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/एससीयों के अलावा राज्यों मे मिलिटरी कमिशनों, अलग–अलग स्तर के कमांड के अलावा कुछ सब कमेटियों एवं विभागों एवं समन्वय तंत्र को गठित की गयी. हमारी केंद्रीय कमेटी द्वारा आर्थिक पॉलिसी, कैडर पॉलिसी, जेल कम्यून की घोषणा पत्र, शहरी कार्य पर, क्रांतिकारी जन कमेटियों नीतिगत कार्यक्रम, दुश्मन की एलआईसी नीति पर हमारी नीतिगत दस्तावेज, हमारा देश में जाति आधारित अर्धसामंती व्यवस्था की विशिष्ठताओं, उसमें चरणबद्ध तरीके से हो रहे बदलावों का अध्ययन करते हुए जाति का सवाल, महिला सवाल पर हमारी दृष्टिकोण, राष्ट्रीयताओं का सवाल, भारत देश के उत्पादन संबंधों में बदलाव–हमारा राजनीतिक कार्यक्रम, पार्टी अपने अतंरराष्ट्रीय कर्तव्यों को पूरा करने के लिए 'सर्वहारा के अंतरराष्ट्रीय संगठन गठित करने पर हमारी पार्टी का दृष्टिकोण' नामक दस्तावेज एवं 'चीन एक नयी सामाजिक–साम्रज्यवादी शक्ति है! वह विश्व पूंजीवाद– साम्राज्यवादी व्यवस्था का अभिन्न अंग है!' आदि दस्तावेजों को मालेमा सैद्धांतिक व राजनीतिक नजरियें से बनायी गयी. पार्टी में गैरसर्वहारा गलत रुझानों को सुधारने के लिए शिक्षा एवं शुद्धीकरण अभियान और पार्टी एवं पीएलजीए को मजबूत करने के लिए बोल्शेवीकरण अभियान चलायी गयी.

पार्टी दीर्घकालीन लोकयुद्ध के सिद्धांत के अनुप्रयोग में प्रगति हासिल की. वह शासकों के शोषणमूलक नीतियों के खिलाफ देशभर में उत्पीड़ित वर्गों एवं सामजिक तबकों के हजारों–हजार जनता को, इसमें उल्लेखनीय संख्या में महिलाओं को गोलबंद करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के ग्रामीण इलाकों में वर्ग संघर्ष एवं गुरिल्ला युद्ध को तेज व व्यापक किया. बड़ी संख्या में जनता व्यापक स्तर पर मजदूर, किसान, आदिवासी, महिला, छात्र, युवा, सास्कृति आदि संगठनों में, बाल संगठनों में, विभिन्न तरह के जन मिलिशिया में संगठित हो गयी. इसमें विभिन्न संगठन विभिन्न स्तरों पर विकसित हुए. खासकर आसमान में आधा हिस्से के तौर पर होने वाली महिलाओं को जागरूक करना, संगठित करना, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक सत्ता आदि क्षेत्रों में विकसित करने के दौरान आंदोलन में वे अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने में अभूतपूर्व कार्य हुआ. इससे पीएलजीए के तमाम फार्मेशनों में, पार्टी व सैनिक विभागों में क्रांतिकारी जन सरकारों में भी उन्होंने उल्लेखनीय संख्या में शामिल हो गयीं. इलाकावार सत्ता दखल करने के दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाईन के तहत आधार इलाकों की स्थापना के लिए रणनीतिक इलाकों में आदिवासियों के दबंग सियानों एवं समंती शक्तियों को नियंत्रित एवं सत्ता से उखाड़ कर उन पर मजबूत स्थिति हासिल करने वाले गुरिल्ला जोनों के केंद्रीय स्थानों में गुरिल्ला बेसों को गठित किया गया. इन बेसों के कई इलाके के गांवों में ग्राम पार्टी कमेटियों को

गठित किया गया. क्रांतिकारी जन राजनीतिक सत्ता के इकाइयों के रूप में क्रांतिकारी जन कमेटियां (आर.पी.सी.) भ्रूण रूप में अस्थित्व में आयी. बहुत जगहों पर ग्राम एवं एरिया स्तर पर, कुछ जगहों पर डिविजन स्तर पर वे क्रांतिकारी जन सरकारों के रूप में लंबे समय से काम करते हुए नव जनवादी शासन चला रही हैं और क्रांतिकारी जनता का जीवन स्तर बढ़ा रही हैं. गुरिल्ला बेसों ने पार्टी के रणनीतिक कर्तव्यों को निभाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही. हमारा देश के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में यह एक नया अनुभव है. वे झूठी संसदीय व्यवस्था और शोषणमूलक सरकारों द्वारा अपनायी गयी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरण नीतियों को विरोध करते हुए, उनके द्वारा चलाए जा रहे झूठे सुधारों को नकारते हुए, एक सही वैकल्पिक राजनीतिक जनवादी सत्ता के रूप में एक राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक नमूने को देश की जनता के सामने पेश कर रही हैं.

पार्टी ने राजनीतिक जनांदोलनों को निर्माण करने में महत्वपूर्ण अनुभव हासिल की. केंद्र–राज्य सरकारों की जनविरोधी एवं देशद्रोही साम्राज्यवादी वैश्वीकरण नीतियों के खिलाफ देश के कई राज्यों में आंदोलन, भारी प्राजेक्टों, खनन परियोजनाओं, आदि के लिए जंगलों से आदिवासी व गैर–आदिवासी जनता को बेदखल करने एवं राज्यहिंसा के खिलाफ लालगढ़ जैसे आंदोलन, सामंतवाद विरोधी नारायणपटना जैसे आंदोलन, जनवादी तेलंगाना को स्थापित करने के लक्ष्य से जोड़ कर, पृथक राज्य की मांग को लेकर व्यापक जन समुदायों को गोलबंद करते हुए चलाया गया आंदोलन, सामंतवादी व ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी शक्तियों द्वारा दलितों, धार्मिक अल्पसंख्यकों पर चलायी गयी हमलों के खिलाफ जनांदोलन, जनता की दैनिक समस्याओं पर, क्रांतिकारी आंदोलन पर केंद्र–राज्य सरकारों के दमन अभियानों के खिलाफ, राजनीतिक बंदियों की रिहाई की मांग करते हुए आंदोलन जैसे कई जुझारू जनांदोलन चलाए गए. पार्टी ने विभिन्न जनांदोलनों में सक्रिय रूप में हिस्सा लिया और उन्हें समर्थन दिया. इससे जनाधार बढ़ाने में, मित्र शक्तियों को प्राप्त करने में, नयी शक्तियों को प्राप्त करने में, क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों को विस्तार करने में एवं पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा को विस्तार करने में ये आंदोलन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

दूसरी तरफ पार्टी के खिलाफ शासक वर्ग एवं सरकारी सशस्त्र बलों के आला अधिकारी बड़े पैमाने पर मनोवैज्ञानिक युद्ध तेज करते रहे और यह दुष्प्रचार करते रहे कि समाजवाद व साम्यवाद पुराना बात बन गयी, माओवादी हारने का युद्ध लड़ रहें हैं. दुश्मन के साथ गले मिलाकर संशोधनवादी पार्टियां हमारी पार्टी की लाईन पर खुलेआम हमला करते हुए आंदोलन को कमजोर करने के लिए प्रयास किया. पार्टी

ने सीमित संसाधनों से ही दुश्मन के इस मनोवैज्ञानिक युद्ध का मुकाबला करते हुए क्रांतिकारी राजनीतिक प्रचार युद्ध चलाया. देश–दुनिया में क्रांतिकारी शक्तियों में एक अनुकूल राजनीतिक ध्रुवीकरण के लिए रास्ता सुगम बनाया.

साम्राज्यवादियों के मार्गदर्शन में भारत के शासक वर्ग द्वारा हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन का पूरा उन्मूलन के लिए समय समय पर चलाए गए प्रतिक्रांतिकारी दमन अभियान दरअसल 'जनता पर युद्ध' ही था. यह वर्तमान ऑपरेशन 'कगार' के दौरान 'जनसंहार युद्ध' का रूप ले लिया है. इस 'जनता पर' – 'जनसंहार युद्ध' के खिलाफ क्रांतिकारी, जनवादी व प्रगतिशील संस्थाओं, जन संगठनों, विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुखों ने संयुक्त मोर्चों के मातहत विभिन्न रूपों में विरोध प्रदर्शन एवं जनवादी आंदोलन चलाया. इन विरोध प्रदर्शनों को, विशेषकर 2014 से मोदी के नेतृत्व में सत्तारूढ़ ब्राह्मणीय फासीवादी भाजपा सरकार द्वारा बहुत ही क्रूर तरीके से कुचला जा रहा है. विभिन्न जनवादी संस्थाओं, विभिन्न क्षेत्रों के कई प्रमुखों, बुद्धिजीवियों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, जन संगठन के कार्यकर्ताओं, वकीलों, छात्रों, मीडिया/पत्रकारों को उपा कानून के तहत लंबे समय तक जेलों में ठूस कर बंदी बनायी गयी है, जिसमें कुछ लोगों को निर्दयता से जेलों में हत्या की गयी.

पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए के गठन के बाद उसके विभिन्न स्तरों के कमिशनों व कमांडों के मातहत सरकारी भाड़े के सशस्त्र बलों पर, वर्ग दुश्मनों एवं उनके दलालों पर पीएलजीए बलों द्वारा गुरिल्ला युद्ध को तेज व व्यापक करते हुए पार्टी के केंद्रीय कर्तव्य एवं अन्य प्रमुख कर्तव्यों को पूरा करने के दौरान उच्च स्तर के अनुभव प्राप्त किया गया. विभिन्न इलाकों में गुरिल्ला युद्ध के तहत कार्यनीतिक जवाबी अभियानों को एवं कार्रवाइयों को अलग रूप से, संयुक्त रूप से एवं समन्वय के साथ चलाया गया. सीएमसी ने विभिन्न तरह के सैन्य प्रशिक्षण सिलाबसों को विकसित की और इससे सैन्य क्षेत्र के नेतृत्व एवं पीएलजीए बलों की लड़ाकू क्षमता, कौशल (टेक्निक्स व स्किल्स) एवं कार्यनीति बनाने की क्षमता बढ़ी. समया–सीमा रखकर कार्यनीतिक जवाबी हमले के अभियान चलाते हुए, उन्हें प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व करते हुए उल्लेखनीय सकारात्मक बदलाव हासिल करते रहे. इसके तहत मध्य व पूर्वी रीजिनल कमांडों के नेतृत्व में चलाया गया नयागढ़ अभियान–ऑपरेशन 'रोप वे'; बिहार–झारखंड में जहानाबाद व चाईबासा जेल ब्रेक ऑपरेशन, गिरिडीह, खासमहल, राजपुर–बघैला, झाझा, जाजपुर रेडों, लखीसराय जिला कोर्ट पर हमले में पोलित ब्यूरो व सीएमसी सदस्य को दुश्मन के चुंगल से रिहाई करना, ममाईल, बांदु–पंडुआ जवाबी हमले की कार्रवाइयों, गिरिडीह में जेल बंदियों के पुलिस एस्कार्ट गाड़ी पर हमला, छिपादोहार, धरधरिया, भंडरिया, अमवाटीकर, डुमरीनाला, कालापहाड़ एम्बुशों,

ऑपरेशन हिल विजय व ऑपरेशन मानसून के खिलाफ प्रतिरोध अभियानों, कोल्हान–पोडहाट प्रतिरोध अभियान; दंडकारण्य में मुरकीनार, रानीबोदली रेडों, पदेड़ा, कोत्ताचेरुवु, उरपलमेट्टा, मल्लमपोडूर, मदनवेड़ा, मुकरम, कोंगेरा, पूसटोला, झीरमघाटी, टाहकावाड़ा, कसलपाड़, कोत्ताचेरुवु, बुरकापाल, झांबूरखेड़ा, मिनपा, कड़ेनार, जीरगूड़ेम एम्बुशों, बोट्टेम के पास दुश्मन के हवाई हमला को प्रतिरोध करने की कार्रवाई, धर्मारम व जीरागूड़ेम रेडों; आंध्र–ओडिशा सीमा इलाके में आर. उदयगिरी व नाल्को रेडों, तेल्लराई, बलिमेला, सुंकी एम्बुशों; महाराष्ट्र में नवाटोला एम्बुश; पश्चिम बंग में सिल्दा रेड; ओडिशा में सनबाइल व सहजपानी एम्बुशों आदि गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों में दुश्मन के बलों को मजबूत चोट पहुंचाए गए. पिछले दो दशकों में केंद्र–राज्य के दुश्मन के बलों पर पीएलजीए ने 4,073 बड़े, मझौले एवं छोटे किस्म के कार्यनीतिक जवाबी हमलों को अंजाम दिया. दुश्मन के पुलिस, अर्धसैनिक व कमांडो बलों के 3,090 जवानों को उन्मूलन कर, 4,077 को घायल किया, उनके पास से 2,365 आधुनिक हथियार और 1,19,682 कारतूस आदि जब्त किया गया. इससे 'दुश्मन के हथियार ही हमारे हथियार' के नारे को साकार करते हुए, इन हथियारों से पीएलजीए को मजबूत कर, सैकड़ों नए योद्धाओं को हथियारबंद किया गया. इसके अलावा इन दो दशकों में दुश्मन के बलों द्वारा पीएलजीए बलों पर हजारों घेराबंदी एवं उन्मूलन हमलें किए गए. इनमें से ज्यादा तर हमलों का पीएलजीए ने साहसिक ढंग से मुकाबला कर कारगर जवाब दिया. इन पूरो प्रयासों के जरिए क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में गुरिल्ला युद्ध को सापेक्षिक रूप से तेज एवं व्यापक किया गया.

पीएलजीए में जन खुफिया विभाग, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, टेक्निकल, कम्युनिकेशन, आपूर्ति जैसे सेना के विभाग विकसित हुए. पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए ने एक क्रांतिकारी राजनीतिक सेना के बतौर राजसत्ता को छीनने का क्रांतिकारी राजनीतिक प्रचार करने, पार्टी, जनसंगठन, जन मिलिशिया, क्रांतिकारी जन सरकारों (आर.पी.सी.) के निर्माणों एवं जनांदोलनों में जनता को गोलबंद करने, कृषि उत्पादन–कृषि जमीन समतलीकरण, सिंचाई के निर्माण अभियानों में हिस्सा लेने–रक्षा दिलाने, शिक्षा, जन स्वास्थ्य जैसे निर्माण एवं कल्याणकारी कार्यकलापों में हिस्सा लेकर जनता का जीवन स्तर बढ़ाने द्वारा पार्टी व पीएलजीए ने जनता के दिलों में मजबूत स्थान कर लिया है. पार्टी कमेटियों व कमांडों के आह्वान पर विभिन्न राजनीतिक अभियानों में, खासकर कई भर्ति अभियानों में पीएलजीए अपनी भूमिका निभाई और सैकड़ों युवती–युवकों ने पीएलजीए में भर्ति हुए. ये भर्ति अभियान दो प्रधान गुरिल्ला जोनों में जन निर्माणों एवं क्रांतिकारी जन कमेटियों की ग्राम जनसभाओं

के साथ माता–पिताओं ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

पार्टी ने अपने अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा के कर्तव्य के तहत देश–दुनिया में विभिन्न गलत रुझानों के खिलाफ सैद्धांतिक संघर्ष में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया. दक्षिणी एशिया के माओवादी पार्टियों एवं संस्थाओं के समन्वय केंद्र (सीकंपोसा) की स्थापना में, प्रचंड–भट्टाराय के आधुनिक संशोधनवाद से लड़ने में मुख्य भूमिका निभाई. अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा संस्था के निर्माण पर हमारी पार्टी का पत्र को अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के सामने रखा गया. पार्टी विभिन्न रूपों में विभिन्न क्रांतिकारी संस्थाओं के साथ संबंध चलाते हुए अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में आपसी भाईचारा आंदोलनों को विकसित करने के लिए प्रयास किया. खासकर, भारत के जनयुद्ध के समर्थन में, भारत के जनयुद्ध पर भारत के शासक वर्गों के प्रतिक्रांतिकारी दमन अभियानों को रोकने एवं राजनीतिक बंदियों की रिहाई की मांग करते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 2011 से लगातार भाईचारा आंदोलन चलते रहे हैं. फिलिप्पींस जनयुद्ध के समर्थन में हमारी पार्टी ने 2013 एवं 2022 में भाईचारे अभियान चलाए. फिलिप्पींस कम्युनिस्ट पार्टी ने जून–जुलाई 2024 में भारत के जनयुद्ध के समर्थन में और ऑपरेशन कगार के खिलाफ भाईचारा अभियान चलाया. ये सारे कार्यक्रम हमारा जनयुद्ध पर और अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन पर सकारात्मक प्रभाव डाला.

पार्टी वैचारिक, सैद्धांतिक एवं राजनीतिक रूप से पार्टी लाईन को समृद्ध बनाने के बावजूद, साम्राज्यवादियों के बल पर भारत के फासीवादी शासक वर्ग द्वारा लगभग दो दशकों से चलाए गए फासीवादी केंद्रीकृत प्रतिक्रांतिकारी अभियानों की वजह से पहले शहरी व मैदानी इलाकों में, उसके बाद के समय में जंगली इलाकों में बड़ी संख्या में नेतृत्व व सदस्यों एवं पीएलजीए बलों को खोना पड़ा. क्रांतिकारी जन संगठनें एवं क्रांतिकारी जन सरकारें कमजोर हो गयी और जनाधार व आंदोलन के इलाकें सिकुड़ गए. कुल मिलाकर, जनांदोलन, गुरिल्ला युद्ध एवं आत्मगत शक्ति में बहुत हद तक गिरावट आयी. क्रांतिकारी शिविर में आई इस बदलाव को आकलन कर, क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने की बुरी मंशे से, जनवरी 2024 से दो वर्षों की समयसीमा में पार्टी, पीएलजीए एवं जन निर्माणों तथा क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के लिए फासीवादी केंद्र व राज्य सरकारें सूरजकुंड प्रतिघाती नयी योजना के तहत अंतिम युद्ध के नाम पर 'ऑपरेशन कगार' हमले को शुरू किया है. इस तरह 'ऑपरेशन कगार' में दुश्मन के हमले के स्वभाव में मौलिक बदलाव आया है.

दुश्मन पूरी तरह हमारे कार्यकलापों को रोकने के लिए समस्त तैयारियां कर ली है. पार्टी व जनता के मनोबल पर चोट पहुंचाने एवं क्रांतिकारी जनाधार को ध्वस्त

करने की कोशिश कर रही है. माओवादी विरोधी अभियान चलाने के लिए बड़ी संख्या में अतिरिक्त आईपीएस अधिकारियों को आंदोलन के इलाकों में तैनात कर लिया है. आंदोलन के इलाकों में मुखबिर–कोवर्ट जाल बड़े पैमाने पर मजबूत कर लिया है. आधुनिक हथियार एवं टेक्नोलोजी से लैस हजारों की संख्या में केंद्र व राज्य के अर्धसैनिक, विशेष पुलिस एवं कमांडो के अतिरिक्त बल, इनके छद्म रूप में भारतीय सेना के विशेष यूनिटों, एनएसजी कमांडों, वायुसेना के गरुड कमांडों को तैनात कर लिया है. विभिन्न राज्यों में जहां क्रांतिकारी आंदोलन चल रहा है, बेरोजगार यवती–युवकों, आदिवासियों, दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर गद्दार बनने वालों, जन दुश्मन परिवारों के सदस्यों के साथ प्रतिक्रांतिकारी ग्रेहाउंड्स, एसटीएफ, जगुआर, हाक, एसओजी, थंडरबोल्ट, सी–60, डीवीएफ, डीआरजी, बस्तरिया बटालियन, दंतेश्वरी फाइटर्स जैसे विभिन्न राज्य व जिला बलों एवं कोबरा अर्धसैनिक कमांडो बलों को निर्माण कर तैनात कर लिया है. क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में केंद्र व राज्य सरकारी बलों की संख्या 2010 के बीच में 3½ लाख थी, वह 2014 तक 5 लाख, वर्तमान में 7 लाखों से अधिक हो गयी है. मोदी सरकार ने घोषणा कर ली है कि क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में और भी ज्यादा बलों को भेजा जाएगा. 2009 में ऑपरेशन ग्रीन हंट की शुरूआत से पहले ही आंदोलन के इलाकों में 400 किलेबंदी थानों एवं 2,200 कम्युनिकेशन टॉवरों को निर्माण करने की केंद्र सरकार की योजना अब लगभग पूरी तरह कार्यान्वित हो गई है. इसके अलावा 'समाधान' अभियान के हमले के तहत फारवार्ड ऑपरेशनल बेसों (एफओबी) के निर्माण की प्रक्रिया 2023 तक लगभग पूरी हो गयी थी. केंद्र गृह मंत्रालय ने घोषणा कर ली है कि 2019 से 2023 दिसंबर तक माओवादी आंदोलन के इलाकों में 199 कार्पेट सेक्युरिटी कैंपों/फारवार्ड ऑपरेशनल बेस कैंप लगाए गए थे. इसके मुताबिक एक–एक कैंप में 300–500 जवान होंगे, यानी 1,00,000 अतिरिक्त सशस्त्र बलों की तैनाती की गयी. 2021 से माओवादी विरोधी अभियानों के तहत जनावासीय इलाकों, खेत–खलिहानों एवं जंगलों में दसियों संख्या में ड्रोनों के जरिए बमबारी करते हुए जनता में दहशत फैलायी जा रही है. हाल ही में सैना के टैंकों को इस्तेमाल किया जा रहा है. 2024 जनवरी से अभी तक देश में लगभग 50 नए अर्धसैनिक व पुलिस कैंप लगाए गए हैं. केंद्र–राज्य सरकारों ने घोषणा कर ली है कि बस्तर इलाके में आगामी दिनों में और भी 29 कैंप लगाए जाएंगे. झारखंड राज्य में भी इसी तरह नए–नए अतिरिक्त कैंप लगाए जा रहे हैं.

देश में क्रांतिकारी आंदोलन के रणनीतिक इलाकों के सात राज्यों के सरिहद इलाकों में इस तरह कार्पेट सेक्युरिटी कैंपों का विस्तार की प्रक्रिया लगभग पूरी हो चुकी है. 2012 में ही भारत देश में घने जंगलों में गुरिल्लाओं की गतिविधियों पर

निगरानी रखने के लिए रीसाट–1 उपग्रह को प्रयोग किया गया था. उसके बाद ड्रोन टेक्नोलोजी बड़े पैमाने पर विकसित हुई. वर्तमान में हर पुलिस थाने एवं हर पुलिस कैंप में ड्रोनों को तैनात कर माओवादी क्रांतिकारियों की गतिविधियां जानने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है और तत्कालिक (रियल टाईम) सूचनाएं मुहैया की जा रही हैं. माओवादियों के विरोध में चलाए जाने वाले हर अभियान में हिस्सा लेने वाले दुश्मन के बलों को कई तरह के प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं. जनता पर आटोमेटिक रायफलों एवं आर्टिलरी से अंधाधुंध गोलीबारी व बमबारी कर हत्याकांडों एवं अत्याचारों को अंजाम देने के लिए उन्हें भड़काते हुए, इसके लिए किसी भी तरह के रुकावट न रहें, इसे सुनिश्चित किया गया है.

पीएलजीए के यूनिटों के सेक्शन, प्लाटून, कंपनी एवं बटालियन फार्मेशनों की सुरक्षा में काम करने वाले हमारी पार्टी के नेतृत्व (सीसी से एसी तक) एवं पीएलजीए बलों को उन्मूलन करने, विशेष कर सीसी व राज्य स्तर के नेतृत्व को उन्मूलन करने के लिए केंद्र व राज्य सरकारों के अर्धसैनिक व पुलिस कमांडो बलों के अलावा भारतीय सेना के बलों को भी तैनात कर हमले किए जा रहे हैं. शहरी, मैदानी, जंगली इलाकों में जनसंगठनों पर, जनांदोलनों पर भी वे एनआईए आदि खुफिया एजेंसियों समेत सशस्त्र बलों को इस्तेमाल कर बड़े पैमाने पर हमले किए जा रहे हैं. वर्तमान में गुरिल्ला जोनों एवं लाल प्रतिरोध इलाकों में दुश्मन ने मुख्य रूप से घेराबंदी हमले की पद्धति अपना रही है. एक–एक बड़े अभियान में 1,500 से 3,000 तक, कभी–कभी इससे भी बहुत अधिक संख्या में विशेष पुलिस, कमांडो, अर्धसैनिक व सैनिक बलों को तैनात कर रहा है. एक–एक अभियान में 20–25 गांवों के दायरे या 10–12 कि. मी. दायरे की घेराबंदी कर, छानबीन करने और हमारे बलों को उन्मूलन करने का तरीका (कार्डन, सर्च एवं किल) अपना रहा है. इन हमलों की वजह से देशभर में पूरे जंगली, शहरी व मैदानी आंदोलन के इलाकों में हमारी पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा द्वारा चलाए जा रहे राजनीतिक, सांगठनिक एवं सैनिक कार्य में गंभीर अडचनें एवं खतरें और अधिक हो गए हैं.

पिछले दो दशकों में देशभर में दुश्मन और हमारे बीच जारी भीषण वर्ग संघर्ष में हमने अस्थायी रूप से पीछे हटने एवं आत्मगत शक्ति (पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चा) कम हो जाने के बावजूद कुछ वन क्षेत्रों में हमारा कार्य सक्रिय रूप से बरकरार है. कुल मिलाकर, गंभीर नुकसानों के बीच ही क्रांतिकारी आंदोलन में कुछ कमजोरियां होने के बावजूद 2004 से 2011 तक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण सफलताएं हासिल करते हुए आगे बढ़ाता गया था. उसके बाद के समय में दुश्मन के क्रूर दमन अभियानों जिसमें और तेजी व व्यापकता आयी, को उचित रूप से नहीं मुकाबला कर पाएं,

जनांदोलनों को विकसित नहीं कर पाएं और पार्टी अपनी आत्मगत कमियों, कमजोरियों व खामियों से उबर नहीं पायीं, इसी वजह से क्रांतिकारी आंदोलन 2013 तक कठिन दौर का समाना किया, 2018 तक देशभर में अस्थायी रूप से पीछे हट गया. बाद मे क्रांतिकारी आंदोलन को अस्थयी रूप से पीछे हटने की स्थिति से उबारने के लिए जो प्रयास किया गया, उसे केंद्रीय कमेटी द्वारा 2024 में पार्टी की 20वीं संस्थापक वर्षगांठ मनाने के अवसर पर, संश्लेषित किया गया.

अस्थायी पीछे हट की स्थिति से उबर कर क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक रूप से मजबूत करना अहम पहलू है. इसपर बल देते हुए केंद्रीय कमेटी ने 2019 में पार्टी मजबूतीकरण अभियान के लिए आह्वान किया. इस अभियान में अस्थायी पीछे हट की स्थिति में, बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में एवं कार्पेट सेक्युरिटी मजबूत होने की स्थिति में केंद्रीय कर्तव्य समेत अन्य फौरी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए पार्टी कतारों को शिक्षित करने का प्रयास किया गया. पार्टी की सदस्यता बढ़ाना, नीचे से ऊपर तक पार्टी कमेटियों का मजबूतीकरण, देशभर में पार्टी काम करने वाले तमाम इलाकों में मित्र शक्तियों से मिलकर विभिन्न संयुक्त मोर्चा के मंचों को निर्माण कर, उनके बैनर तले प्रचार व आंदोलन कार्यक्रमों, खुला व कानूनी संघर्ष व सांगठनिक रूपों को इस्तेमाल कर व्यापक जनता को उनकी दैनंदिन एवं बुनियादी समस्याओं पर जनांदोलनों में गोलबंद करने का काम, साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद एवं सामंतवाद विरोधी – कार्पोरेटीकरण व सैन्यकरण विरोधी आंदोलनों में हजारों जनता को गोलबंद करने का काम किया गया. दुश्मन द्वारा चलाए गए प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का मुकाबला करने के लिए पीएलजीए बलों ने गुरिल्ला इलाकों में गुरिल्ला युद्ध के विभिन्न मौलिक कार्यनीति अपनाकर कार्यनीतिक जवाबी कार्रवाइयों को अंजाम दिया. 2021 से जुलाई 2024 तक 669 गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों को अंजाम देकर, 261 पुलिस जवानों को उन्मूलन कर, 516 को घायल किया. उनके पास से 25 हथियार जब्त कर लिया.

पिछले 3½ वर्षों में अस्थयी रूप से पीछे हटने की स्थिति से उबरने के लिए उक्त सकारात्मक कार्य करने के बावजूद, दुश्मन के हमले में केंद्रीय कमेटी से लेकर नीचे तक पार्टी को गंभीर नुकसान उठाना पड़ा, जो नुकसानों से बचने के लिए बदली हुई वस्तुगत परिस्थितियों के अनुरूप कार्यनीति एवं कार्य पद्धति को नहीं बदलने का नतीजा है. पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा के क्षेत्रों के 439 जन अनमोल कामरेडो समेत, 215 हथियार हमने खो दिए. फलतः जनयुद्ध के तीन जादुई क्षेत्र मात्रा में एवं गुणवत्ता में और कमजोर हो गई.

कुल मिलाकर, वर्तमान दुश्मन के ऑपरेशन 'कगार' के कारण पार्टी ने अभूतपूर्व

ढंग से दुश्मन के घेराबंदी व उन्मूलन युद्ध का सामना कर रहा है. हमारी पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा एवं भारतीय क्रांति को रक्षा करना फौरी कार्यभार के रूप में सामने आया. दुश्मन के हमलों ने एक तरफ हमारी पार्टी के कमी–कमजोरियों को भी सामने ला रहा है, दूसरी तरफ हमारी कतारों को दृढ़ता से खड़े होने एवं साहसिक ढंग से युद्ध कौशल को इस्तेमाल करते हुए, सही कार्यनीति अपनाकर लड़कर आगे बढ़ने की आवश्यक परिस्थिति पैदा कर रही है. जो यह ढोंग करते हैं कि दीर्घकालीन लोकयुद्ध हमारी सामाजिक परिस्थितियों में अनुकूल नहीं है, इसके लिए अलग–अलग बहाने बनाकर अपनी पराजयवाद पर परदा डाले की गलत रुझान है. दुश्मन द्वारा फेंके गए टुकड़ों के लालच में कुछ कमजोर वालें शिकार हैं. इस तरह के लोगों को, परीक्षा की इन घड़ियों ने एक के बाद एक का पर्दाफाश किया. दुश्मन के साम, दान, भेद एवं दंड नीतियें की वजह से जनता में से एक तबका ने सक्रियता खो दी. और कुछ लोग दुश्मन के दबाव से घुटने टेक दिया. बहुत हद तक स्थानीय निर्माण धक्का खाया. इन सभी कारणों से एक तबके के कामरेडो का मनोबल गिर रहा है. मालेमा की सैद्धांतिक रोशनी में, बहुत खून बहाकर हासिल किए गए अपार अनुभव, मूल्यवान सबक, पार्टी की जुझारूपन एवं बलिदान की चेतना को ग्रहण कर, व्यवहार में दृढ़ता से काम करने और इन सबके बारे में पूरी पार्टी में सही समझदारी देने के बगैर वर्तमान प्रतिकूल परिस्थिति में वे अनुकल पहलुओं को समझना संभव नहीं है.

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि क्रांतिकारी आंदोलन लहरों की तरह आगे बढ़ती है. वर्ग संघर्ष में दुश्मन का हमला–क्रांतिकारी शक्तियों का जवाबी हमला, फिर इन आपसी दुश्मनी शक्तियों के बीच हमले–जवाबी हमले होते हुए, इस दौरान शक्ति–सतुलन में होने वाले मात्रात्मक व गुणात्मक बदलाव, मोड़ों, घुमावों, ज्वार–भाटों के बीच सुशिक्षित होते हुए फौलादी बनते हुए, तब अंतिम जीत प्राप्त करने की परिस्थिति उभरेगी, जब क्रांतिकारी शक्तियां दुश्मन के हमले को चकनाचूर करने की स्थिति में पहुंच पाएगी. इसलिए दीर्घकालीन लोकयुद्ध में मोड़ों, घुमावों, हार–जीत आम बात है, जो भी हो, अंतिम जीत जनता की ही होगी. शोषक–शासक वर्गों को उखाड़ने के अंतिम समय तक वे अपनी सत्ता बरकरार रखने के लिए पूरी ताकत को झोंक कर क्रांतिकारी शक्तियों से लोहा लेते हैं, यह विश्व क्रांतिकारी आंदोलन के अनुभवों से साबित हुआ एक तथ्य है. इसलिए द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद के उसूलों के मुताबिक यह समाज का परिणाम, कितने भी मोड़ों, घुमावों, उतारों–चढ़ावों होने पर भी अनिवार्य रूप से और एक नया समाज, यानी वर्गविहीन समाज की स्थापना के लिए एक नयी छलांग लगाने की ओर, विकास के पथ पर आगे बढ़ना तय है. यह इतिहास का एक नियम है. इसे समझने के लिए अपना वैचारिक स्तर को

ऊंचा उठाना चाहिए एवं राजनीति को सबसे आगे रखना चाहिए. व्यापक जनता से घनिष्ठ संबंध बनाते हुए, उनके अंदर हमारी क्रांतिकारी राजनीति व सिद्धांत ले जाना चाहिए. दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाईन को ठोस परिस्थितियों के मुताबिक सृजनात्मक रूप से लागू करने में कमियों–खामियों से उबरना चाहिए. अपनी कार्यनीति एवं कार्य पद्धति में गलतियों को सुधारते हुए उन्हें सृजनात्मक रूप से विकसित करना चाहिए. हमारे कार्यभार पूरा करने में लाल एवं विशेषज्ञ बनना चाहिए. तब हम और भी मजबूत, संगठित एवं गतिशील होकर विकसित हो सकते हैं.

हमारे क्रांतिकारी लक्ष्य एवं कार्यभारों को हासिल करने में रुकावट बने विभिन्न पहलुओं को सुधारने एवं पार्टी को मजबूत करने के लिए हमारे पास एक मजबूत हथियार है. यह है, हमारा सिद्धांत मालेमा. इस हथियार को और भी सटीक और मजबूती से उपयोग करें, यही है पार्टी के बोल्शेवीकरण का सार. इसका मतलब है – 1. माक्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद और हमारी पार्टी की राजनीतिक व सामरिक लाईन को गहराई से अध्ययन करना, समझना और किसी भी हिचकिचाहट के बगैर दृढ़ता से पालन करना; मा–ले–मा को हमारे ठोस व्यवहार में सृजनात्मक रूप से प्रयोग करना और पार्टी लाईन को मजबूती से लागू करना; हमारी सैद्धांतिक और राजनीतिक लाईन के संबंध में अडिग रहना; अलग–अलग पूंजीवादी, सामंतवादी विचारों के खिलाफ लड़ते हुए इस लाईन को सही साबित करना व पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक रूप से सुदृढ़ बनाना; 2. हमारी पार्टी को एक मजबूत संगठन के रूप में विकसित करना जो सही वैचारिक, राजनीतिक, सांगठनिक और सामरिक लाईन से लैस हो, जो सही तरीके से जनवादी केन्द्रीयता को अमल करता हो, जो अनुशासन को सख्ती से लागू करता हो, जिसका चरित्र व्यापक जनाधार वाला हो; 3. पार्टी के अंदर और बाहर सभी तरह के दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवादी रूझानों के खिलाफ लड़ना; 4. अपनी गलतियों, कमियों और कमजोरियों को ईमानदारी के साथ स्वीकार करना और अपने व्यवहार से सीखकर उन्हें सुधारना और उनसे बचना; 5. वर्गदिशा और जनता से जनता के पास के माओवादी जनदिशा नियम को अमल करने, जनता के साथ घनिष्ठता से घुलमिल जाने द्वारा, एवं उन्हें मार्गदर्शन देने द्वारा, इस मार्क्सवादी सिद्धांत कि 'जनता ही इतिहास का निर्माता है' से आत्मसात करना.

इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन में वर्तमान में कितने भी प्रतिकूलताएं होने के बावजूद, उन सभी से उबरने के लिए देशभर में कई अवसर मौजूद है. इसके लिए व्यापक उत्पीड़ित वर्गों, सामाजिक तबकों एवं राष्ट्रीयताओं की जनता ही क्रांतिकारी आंदोलन के लिए कभी भी नहीं सूखने वाली झरन जैसा बड़ी स्त्रोत है. इसके अलावा हमारी

आत्मगत शक्ति तमाम क्षेत्रों में उल्लेखनीय स्तर पर घट जाने के बावजूद, दशकों से जारी क्रांतिकारी आंदोलन में फौलादी बनी पार्टी कतार, पीएलजीए बल, क्रांतिकारी जन संगठन एवं जनता अभी भी हैं. देश–दुनिया में क्रांति के लिए परिस्थितियां बहुत ही अनुकूल हैं.

इनके आधार पर वर्तमान फौरी, प्रधान एवं केंद्रीय कर्तव्य है – पार्टी को रक्षा करते हुए, जनता को संगठित करते हुए, लगातार बढ़ते हुए उस जनाधार पर आधारित होकर वर्ग संघर्ष एवं गुरिल्ला युद्ध चलाते हुए, जनाधार को और व्यापक और गहरा करते हुए, आत्मगत शक्तियों को विकसित करना. इसके लिए रणनीतिक दृष्टि से विभिन्न इलाकों की ठोस परिस्थिति पर आधारित होकर सही परिप्रेक्ष्य (perspective) बनाकर, योजनाबद्ध ढंग से पार्टी की शक्तियों को तैनात करना चाहिए. शहरी, मैदानी एवं जंगली इलाकों में उत्पीड़ित वर्गों, सामाजिक तबकों एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की जनता को अपनी दैनंदिन व बुनियादी समस्याओं पर आंदोलनों में संगठित करना चाहिए. इन आंदोलनों को इस ढंग से चलाने में पकड़ हासिल करना चाहिए कि वे आपस में पूरक हो. इलाका जो भी हो, उचित व सहज कवर बनाकर पार्टी को दुश्मन के लिए अभेद्य होने लायक उसे मजबूत करना चाहिए. राजसत्ता को छीनने की क्रांतिकारी राजनीति से हमेशा जनता को लैस करना चाहिए. पार्टी द्वारा पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा को दो मजबूत जादुई हथियारों के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए. पार्टी मजबूतीकरण अभियान को और इसके तहत वैचारिक, राजनीतिक, सांगठनिक एवं सैनिक रूप से पार्टी शिक्षा को सफल बनाने की योजना को लेकर, पार्टी गुणवत्ता को बढ़ाने पर जोर देते हुए, तद्वारा मात्रात्मक रूप से बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए. तभी पार्टी फिर से मजबूत होकर विजय पथ पर आगे बढ़ेगा.

इस तरह पार्टी में, आंदोलन में एवं समाज की वर्तमान परिस्थितियों एवं अंतरविरोधों से हमारे सामने कई चुनौतियां उभर रही हैं. हमें इन्हें सामना करना है. देश में असली स्वाधीनता एवं असली जनवाद हमारी काल्पनिकता से नहीं हासिल कर सकते. जनता को जागरूक करना, जनांदोलनों में गोलबंद करना, जन संगठनों में संगठित करना, उन्हें आंदोलनों में उतारना, अग्रणी शक्तियों को पार्टी में लाना, जनयुद्ध में उनकी सक्रिय भूमिका बढ़ाना, नयी राजनीतिक सत्ता को स्थापित करना, उनकी अपार शक्ति एवं सृजनशीलता को बाहर निकालना, उन्हें हमारी क्रांति में तीन मजबूत जादुई हथियार के रूप में तब्दील करने द्वारा ही उक्त लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं.

इन चुनौतियों से उबरने के लिए जनता के बीच कार्य मुख्य व अहम पहलू होगा. जनता को राजनीतिक रूप से गोलबंद करने द्वारा पार्टी इन चुनौतियों से उबरने की

शक्ति प्राप्त कर सकती है. बदली हुई नयी परिस्थितियों के बीच आंदोलन को आगे बढ़ा सकती है. यही विश्वास देश–दुनिया में क्रांतिकारी, जनवादी शक्तियों, जनता, तमाम भाईचारे पार्टियों ने व्यक्त कर रहा है. इसे पूरा करने की बड़ी जिम्मेदारी हमारे कंधों पर है.

सर्वहारा पार्टी के बतौर हमने मुख्य रूप से कमी–कमजोरियों से सीखना चाहिए. दशकों से भारत देश के क्रांतिकारी आंदोलन में हमें प्राप्त महान अनुभवों से सीखना चाहिए. मजदूर–किसान, मध्यम वर्ग, छोटे–मध्यम स्तर के पूंजीवादियों, आदि तमाम उत्पीड़ित वर्गों एवं उत्पीड़ित समाजिक समुदायों के हितों को पूरा करने के लिए सीखना चाहिए. हमारी शक्ति–क्षमताओं एवं लड़ाकू क्षमता को बढ़ाने के लिए सीखना चाहिए. पूरी पार्टी में सीखने की संस्कृति विकसित करनी चाहिए. तभी इस तरह कदम बढ़ना संभव होगा. जनता कितने भी दुरुस्त हो, अगर पार्टी सर्वहारा विचार के साथ मजबूत व सक्षम नहीं हो, तो जनशक्ति को प्रभावशाली क्रांतिकारी शक्ति के रूप में विकसित करना और क्रांतिकारी आंदोलन की चुनौतियों को सामना करने के लिए उस शक्ति को इस्तेमाल करना संभव नहीं है. इसलिए पार्टी की महत्व को समझना चाहिए और हर पार्टी सदस्या/सदस्य, तमाम स्तरों के हर यूनिट अपने कार्यभारों एवं जिम्मेदारियों पूरा करने के लिए दृढ़संकल्प के साथ सक्षम एवं सक्रिय रूप से काम करना चाहिए. अपनी शक्ति–क्षमताओं को पूरी तरह बाहर निकालना चाहिए. पार्टी में ऊपर से नीचे तक तमाम स्तरों में होने वाले सदस्यों/यूनिटों ने जगह जगह पर अपने दायरे में जनता को संगठित शक्ति के रूप में तैयार करना चाहिए और पार्टी व पीएलजीए की शक्ति–क्षमताओं को बढ़ाना चाहिए. इसके बगैर क्रांतिकारी आंदोलन वर्तमान चुनौतियों को सामना करना संभव नहीं है. मुख्य रूप से तमाम स्तरों में पार्टी की नेतृत्व कमेटियां कितना दृढ़, साहस, समर्थ, सक्रिय, प्रभावशाली एवं एकजुट रहेंगे, उतना इस दिशा में आगे बढ़ने के अवसर जरूर होंगे, अभी जो मौजूद हैं वे और कई गुणा बढ़ा सकते हैं.

प्यारे कामरेडो एवं जनता!

साम्रज्यवादियों के समर्थन से हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन को उन्मूलन करने के लिए कितना भी तीव्रगति व आक्रामकता के साथ क्रूर हमले करने के बावजूद, भारत के शासक वर्ग गंभीर आर्थिक संकट में डुबे हुए हैं. समाज के विकास में कड़ा अवरोध बनी हुई साम्राज्यवाद एवं भारत की अर्ध औपनिवेशिक एवं अर्ध सामंती व्यवस्था मरणावस्था में हैं. यह संकट जैसे–जैसे तेज व व्यापक हो जाता है वैसे–वैसे वे और क्रूर बन जाएंगे, और अधिक व्यापक उत्पीड़ित जनता के विरोध का सामना करना पडेगा, यह इतिहास का एक पाठ है. साम्राज्यवादी वैश्वीकरण नीतियों के

कारण साम्राज्यवादी व्यवस्था वर्तमान में गहरा विश्वव्यापी वित्तीय व आर्थिक संकट में फंसी हुई है. अमेरिका एवं उसकी साम्राज्यवादी मित्र शक्तियों के कारण, मुख्य रूप से चीन व रूस से सामना की जा रही प्रतिस्पर्धा के कारण कई देशों को युद्धों में धकेला जा रहा है. हमारा देश पर उसका प्रभाव है. विश्वभर में भारत जैसे पिछड़े देशों में प्राकृतिक संसाधनों, सस्ती श्रम एवं बाजारों को अधिक से अधिक लूटने के लिए साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियां एवं विभिन्न देशों में उनके दलाली शासक वर्ग पुरजोर कोशिश कर रही हैं, इसके लिए वे फासीवाद (हमारा देश में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद) का सहारा ले रहे हैं. फूट डालो–राज करो की नीति के तहत एक तरफ जनता के बीच सामाजिक विभाजन पैदा करते हुए, दूसरी तरफ संघर्षरत जनता पर पाशविक दमनचक्र चला रहे हैं. हमारा देश में मोदी सरकार जनता को आतंकित कर, उन्हें 'झुकाने के लिए', उनके बीच एकता को तोड़कर, अपने नियंत्रण में लाने के लिए जन प्रतिरोध को कुचलने एवं नियंत्रित करने के लिए उनपर निरंतर हत्याकांडों को अंजाम दी जा रही है. खासकर सरकारी सैनिक, अर्धसैनिक, सशस्त्र पुलिस बलों को कश्मीर में लगभग 10 लाख, उत्तर–पूर्व भारत में लगभग उतनी ही संख्या में, माओवादी आंदोलन के तमाम इलाकों में 7 लाख से अधिक संख्या में तैनात कर निरंतर खून बहा रही है. मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हुए, ड्रोनों एवं हेलिकॉप्टरों से हमले करते हुए, तोपखाना गनों से बमबारी कर रही है. हालांकि, वैश्वीकरण नीतियों का बुरा परिणाम क्या है, इसके बारे में आए दिन उत्पीड़ित जनता को और स्पष्ट होता जा रहा है. इसलिए वे जगह जगह पर आंदोलनों में उतर रहे हैं. इस अनुकूल परिस्थिति को इस्तेमाल कर हमारा देश में समस्त उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित सामाजिक तबकों एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की जनता एवं जनवादी शक्तियों को जागरूक कर, गोलंबर एवं संगठित करना चाहिए. विशेषकर मेहंगाई के खिलाफ, मजदूरी व वेतन में बढ़ोत्तरी, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास, भ्रष्टचार, जनवादी अधिकार, सामाजिक न्याय, छुआछूत, महिलाओं पर अत्याचार, हिंदुत्व फासीवादियों के हमले आदि मुद्दों पर जनता अपने आंदोलन चलाना चाहिए. ऐसी अनुकूल परिस्थिति में हमने नुकसानों को कम करते हुए, कमजोरियों से बचते हुए, दृढ़ संकल्प एवं आत्मबलिदान की चेतना के साथ सक्षम रूप से सही कार्यनीति अपनाते हुए जनयुद्ध चलाना चाहिए, तद्वारा देश में नवजनवादी क्रांति को सफल बनाकर, अंत में समाजवाद–विश्वभर में साम्यवाद की स्थापना के लिए अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग एवं तमाम श्रमिकों के साथ, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के साथ, माओवादी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शक्तियों के साथ कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ने के लिए कई अवसर मौजूद हैं. क्रांतिकारी युद्ध का नेतृत्व करने वाली हमारी पार्टी के प्रति

उत्पीड़ित जनता में विश्वास है. हमारा क्रांतिकारी आंदोलन बहुत कमजोर होने के बावजूद, देश में व्यापक उत्पीड़ित जनता एवं उत्पीड़ित सामाजिक तबकों के लिए एक उज्ज्वल विकल्प के रूप में खड़े होकर उन्हें आकर्षित कर रहा है. प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग भलीभांती जांते हैं कि हमारी पार्टी एवं क्रांतिकारी युद्ध से कितना खतरा है. इसलिए वे हमारी पार्टी को उन्मूलन करने के लिए अत्यंत क्रूरतत तरीके से हमले कर रहे हैं.

इतिहास में और एक पाठ भी है – एक छोटी शक्ति बड़ी शक्ति को हरा सकती है; कमजोर शक्ति ताकतवर शक्ति को ध्वस्त कर सकती है. बहुत ही कम अल्पमत वाले शासक वर्गों से एवं अपने सरकारी भाड़े के सशस्त्र बलों से सत्ता छीनने के लिए, किसी भी देश में हो, क्रांतिकारी युद्ध का सामर्थ्य संपूर्ण रूप से अत्यधिक बहुमत वाली व्यापक जनता पर ही निर्भर रहेगा. शुरू में/पहले छोटी–कमजोर शक्ति के रूप में होने वाली पार्टी इस रणनीति पर संपूर्ण रूप से निर्भर होकर संघर्ष के दौरान मजबूत होगी. बड़ी–ताकतवर शक्ति के रूप में होने वाले दुश्मन को हराएगी. यह विश्व में कई क्रांतिकारी युद्धों में बार–बार साबित हुआ था. मुख्य रूप से स्थानीय संसाधनों पर निर्भर होकर निम्न स्तर के हथियारों से एवं अल्प–प्रशिक्षित हमारे योद्धाओं द्वारा जनयुद्ध के क्रम में ये सफलताएं प्राप्त होती हैं. दुश्मन बड़े पैमाने पर जनसंहारों को अंजाम देते हुए, दावा करता है कि माओवादियों को हम मार रहे हैं. वास्तव में असली युद्ध में नहीं, बल्कि कपटतापूर्ण हमलों में अधिक संख्या में माओवादियों को हत्या कर रहा है. क्या हमने यह नहीं देख रहा है कि किस तरह हमारे दृढ़तापूर्वक हमलों में ये हत्यारे दुम–दबाकर रणक्षेत्र से भाग निकलते हैं? क्या हमने उनकी यह कायरता को नहीं देखा कि कैसे पुलिस मर जाने के बावजूद उसे घोषित किए बगैर चुप्पी साधता कर बैठता है? दुश्मन कितने भी अभियान चलाएं, क्रांतिकारी लक्ष्य के प्रति पार्टी व पीएलजीए के प्रतिबद्धता पर चोट नहीं पहुंच सकता है. कृषि क्रांति कितनी उत्पीड़ित जनता के हित में है हमने प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं. इसलिए पुराने पीढ़ी के कामरेडों की तरह पार्टी के कार्य में हमारी जिम्मेदारी को निरंतर जारी रखना होगा. हमारा भविष्य हमारे हाथों में ही है. इतिहास से सीखने के लिए एक अध्ययन आंदोलन चलाने के बगैर प्रभावशाली रास्ता और कुछ नहीं होगा. लेकिन यह जनयुद्ध के तहत, असली राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं असली जनतंत्र हासिल करने के लिए आगे बढ़ने दौरान, जनता के दृष्टिकोण से और जनता में क्रांतिकारी व देशभक्त स्फूर्ति प्रज्वलित कर, उसे बढ़ाने के पहलू को लेकर चलाना है. पार्टी मजबूत हो, हमारे बीच एकता हो, तभी हमने जनता की मुक्ति का रास्ता अवश्य बना सकते हैं और उत्पीड़ित वर्गों, समुदायों एवं राष्ट्रीयताओं के जीवन एवं आजीविका को

बचा सकते हैं, नवजनवादी क्रांति को सफल बना सकते हैं.

साम्राज्यवादियों और विश्व के उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व उत्पीड़ित जनता के बीच अंतरविरोध दिन–ब–दिन तेज होने के साथ–साथ देश–दुनिया में वस्तुगत परिस्थितियां क्रांति के लिए बहुत ही अनुकूल बनती जा रही हैं. अमेरिका, ब्रिटन, जर्मनी, फ्रांस, इटली जैसे साम्राज्यवादियों के पूरे समर्थन एवं मार्गदर्शन के साथ फिलिस्तीन पर जियोनवाद उन्मादी इज्रायल द्वारा चलाए जा रहे जनसंहार युद्ध में अभी तक 40 हजार फिलिस्तीनी जनता, जिसमें महिलाएं व बच्चें अधिक हैं, की मौत हुई और 90 हजार से अधिक घायल हो गए. गाजा में फिलिस्तीन जनता को उसी इलाके में ही पूरी तरह विस्थापित हो जाने के अलावा आवास, शैक्षणिक संस्थान, सरकारी कार्यालय आदि सबकुछ ध्वस्त हो गए. किसी भी तरह का मानवीय सहायता पहुंचने से वंचित रखकर गाजा इलाके से उन्हें मिश्र देश के सिनाय रेगिस्तान में धकेल कर पूरे फिलिस्तीनी जमीन को कब्जा करने की अपनी बहुप्रतीक्षित योजना को अमल करने के लिए इज्रायल अपना रास्ता सुगम बना रहा है. इसके खिलाफ फिलिस्तीनी जनता, उनके प्रतिरोध संस्थाएं साहसिक ढंग से लड़ रही हैं. इज्रायल के दुराक्रमणकारी युद्ध को रोकने, इज्रायल से संबंध तोड़ने एवं जियोनवादी सरकार की मदद करने वाले इज्रायल कंपनियों को बहिष्कार करने की मांग कई देशों में जनता अपनी सरकारों से कर रही है. इसके अलावा हाल ही में अमेरिका से लेकर यूरोप तक, विश्वविद्यालयों में, सड़कों में छात्र आंदोलन की ज्ज्वालाएं फैल गयीं हैं. अफ्रीकी देश केन्या में सरकार दिवालिया हो गयी, यह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोश (आईएमएफ) एवं अफ्रीका विकास बैंक से लिए गए रुणों का बुरा नतीजा है. तो सरकार ने संसद में आईएमएफ प्रयोजित आर्थिक बिल को पास कर जनता पर अधिक कर लगा दिया. इससे जनता ने बगावत कर संसद पर हमला कर दिया, जिसकी वजह से राष्ट्रपति रूटो ने अपनी सरकार को रद्द करना पड़ा. बंगलादेश में साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों, भारत के विस्तारवादियों, उस देश के दलाल नौकरशाह पूंजीपति व सामंती वर्ग प्रायोजित तानाशाही शेख हसीना सरकार की जनविरोधी नीतियों के कारण देश में दिन–ब–दिन तेज होता जा रहा आर्थिक संकट के खिलाफ, विशेषकर जन अन्मोदन खो गई आरक्षण को लागू करने के खिलाफ छात्रों एवं जनवादी शक्तियों की बगावत, आखिरकार उस सरकार का पतन की ओर धकेल दिया, प्रधानमंत्री हसीना भारत में शरण लेना पड़ा. इस तरह तमाम पिछड़े देशों में साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही शासक वर्ग विरोधी जनांदोलन बड़े पैमाने पर चल रहे हैं. साम्राज्यवादी–पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग अपने देशों के पूंजीपतियों के खिलाफ बड़े स्तर पर आंदोलन कर रहे हैं. ब्रिटन में नस्लभेदी शक्तियों ने 30

जुलाई को दक्षिण पोर्ट में तीन युवतियों को चाकू मार कर हत्या करने के विरोध में एशिया व अफ्रीका से प्रवास पर आयी जनता ने बगावत कर दी, जिससे उस देश में अंतरिक उथल–पुथल अशांति पैदा हुई.

ऐसी परिस्थितियों को इस्तेमाल करते हुए क्रांतिकारी, राष्ट्रीय–मुक्ति एवं जनवादी शक्तियां विश्वभर में विस्तारित हो रही हैं. मालेमा पार्टियां एवं संस्थाएं निर्माण होकर ताकत जुटा रही हैं. पिछड़े देशों में कुछ मालेमा पार्टियां कृषि क्रांतिकारी वर्ग संघर्षों को तेज करते हुए जनयुद्धों के लिए तैयारियां कर रही हैं. इसी तरह, यह समय की मांग है कि पूंजीवादी देशों में भी क्रांतिकारी शक्तियों और मजदूर वर्ग द्वारा समाजवादी क्रांतियों के लिए तैयारियां की जाएं. इसी तरह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और हर देश में साम्राज्यवाद के खिलाफ व्यापक संयुक्त मोर्चा को विकसित करते हुए, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं एवं उत्पीड़ित जनता को एकीकृत आंदोलनों में गोलबंद करना चाहिए. इस पृष्ठभूमि में ही भारत के जनयुद्ध एवं फिलिप्पींस जनयुद्ध के समर्थन में अंतरराष्ट्रीय भाईचारे आंदोलन और व्यापक हो रहे हैं. भारत देश में जनयुद्ध का विकास विश्व समाजवादी क्रांति के लिए मजबूती प्रदान कर सकता है, ऐसा प्रबल आकांक्षा व्यक्त हो रही है. इसे साकार करने की उस महान जिम्मेदारी हमें लेनी होगी.

आइएं! हमारा देश में कष्ट–तकलीफों, शोषण, उत्पीड़न, दमन एवं भेदभाव की वजह बनी साम्राज्यवाद को, दलाल नौकरशाह पूंजीवादी व सामंती वर्गों को प्रतिनिधित्व करने वाली अर्धऔपनिवेशिक व अर्धसामंती व्यवस्था को उखाड़ने के लक्ष्य से नवजनवादी क्रांति का नेतृत्व करने वाली पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन को भाकपा (माओवादी) की 20वीं वर्षगांठ के अवसर पर बचाने के लिए कमर कसेंगे. 'ऑपरेशन कगार' को मुकाबला करेंगे. अगर जनता के लिए क्रांतिकारी पार्टी नहीं हो तो, उन पर शोषक–शासक वर्गों के घोर शोषण, उत्पीड़न, हथकंडें, अन्याय, आधिपत्य, दमन, हत्याकांड एवं अत्याचार बेरोकटोक बढ़ेंगी. उनकी जिंदगियां अकथनीय ढंग से अस्तव्यस्त हो जाएंगी. अगर माओवादी क्रांतिकारी विचारधारा, क्रांतिकारी सिद्धांत एवं क्रांतिकारी व्यवहार नहीं हो, तो उत्पीड़ित वर्गों एवं समुदायों की किसी भी एक बुनियादी समस्या का हल नहीं होगा और सामजिक मौलिक बदलाव संभव नहीं होगा. अगर देश में क्रांतिकारी आंदोलन नहीं हो, तो हमारा देश की जनता के पास कुछ भी नहीं होगा. हमारा देश में असली स्वाधीनता, जनतंत्र की स्थापना, राष्ट्रीयताओं के लिए आत्मनिर्णय अधिकार समेत अलग होने का अधिकार होने वाली असली संघीय व्यवस्था की स्थापना एवं छुआछूत–जातिप्रथा का अंत–सामाजिक न्याय की स्थापना के लक्ष्य एवं राष्ट्रीय जनतांत्रिक क्रांति की जीत के लिए व्यापक जन समुदायों को तीन मुख्य दुश्मनों के खिलाफ आंदोलनों में गोलबंद करते हुए, जनाधार एवं आत्मगत

शक्तियों को बढ़ाते हुए, दुश्मन के खिलाफ दृढ़ता से लड़ते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को अस्थायी पीछे हट से उबार कर विजय पथ पर आगे बढ़ाएंगे.

नारे

★ भाकपा (माओवादी) की 20वीं स्थापना वर्षगांठ को ऊंचा उठाएं!

★ पार्टी को उन्मूलन करने के लक्ष्य से दुश्मन द्वारा चलाए जा रहे 'ऑपरेशन कगार' का मुकाबला करें!

★ जनाधार एवं आत्मगत शक्तियों को बढ़ाते हुए पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन को बचाएं!

★ नुकसानों से बचें! जनयुद्ध में सफलताओं का अनुपात बढ़ाएं!

★ आत्मसमर्पण एवं क्रांति का विश्वासघात को विरोध करें! उत्पीड़ित जनता के हितों को बचाने के लिए दृढ़ता से संघर्ष करें!

★ दीर्घकालीन लोकयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए मजबूत शहरी एवं मैदानी आंदोलन का निर्माण करें! तमाम क्षेत्रों में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार करें!

★ देशभर में लगातार बढ़ता जनाधार पर आधारित होकर साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद एवं सामंत विरोधी वर्ग संघर्ष को तेज करें!

★ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ व्यापक धर्मनिरपेक्ष जनवादी शक्तियों को गोलबंद कर सघर्ष करें!

★ क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में ताकत के मुताबिक गुरिल्ला युद्ध को बढ़ाएं!

★ मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद जिंदाबाद!

★ विश्व समाजवादी क्रांति जिंदाबाद!

★ भारत की नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!

★ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!

दिनांकः 25 अगस्त, 2024

केंद्रीय कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

★★★